P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-11* February 2019
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

शिक्षा और नैतिक मूल्य

सारांश

शिक्षा हर प्रकार के अपेक्षित परिवर्तन तथा सुधार की धुरी होती है, आज शिक्षा स्वयं इस स्थिति में पहुँच गई है कि उसमें आमूलचूल परिवर्तन की अपेक्षा हर तरफ से की जा रही है छात्रों को शिक्षित करने के साथ ही उन्हें संस्कारवान बनाना शिक्षा का प्रथम ध्येय होना चाहिये, लेकिन अब ऐसा नहीं दिखता और इसके दुष्परिणाम कई रूपों में सामने आ रहे है। नैतिक मूल्यों के ह्रास के लिए अकुशल और अयोग्य शिक्षक भी काफी हद तक उत्तरदायी है, बाल–मन किसी पौधे की तरह होता है, उसे जैसा स्वरूप दिया जाए और जो दिशा दिखाई जाए, उसी तरफ बढ़ चलता है, गीली मिट्टी से राम बना लो या रावण उसे फर्क नहीं पड़ता इसकी कमान तो उस गुरू रूपी कुम्हार के हाथों में है जिसमें सृजन की विलक्षण प्रतिभा है, लेकिन अगर कुम्हार निपुण नहीं हो, तो फिर गीली मिट्टी आकार कैसे लेगी? सच में देश के भविष्य निर्माण के लिए नई पीढ़ी को तैयार करने में शिक्षक की भूमिका एक कुशल कुम्हार से कम नहीं है। ऐसी स्थिति में ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है, जो हमारे मन–मस्तिष्क में एक ऐसा आदर्श प्रस्तुत करें, जिससे हम समझे कि हमारी संस्कृति व सभ्यता कितनी महान् है और हमे इसकी रक्षा के लिए प्रेरित करें?

मुख्य शब्द : जनमानस, आधारमूलक, आध्यात्मिक, संस्कारवान, सच्चरित्र, स्वावलम्बी, आमूलचूल।

मंजय कुमार
प्राचार्य,
शिक्षा विभाग,
आई. ए. एम. आर. कॉलेज,
पंचली, मेरठ, भारत

प्रस्तावना

आज जिस प्रकार की शिक्षा भारत के छात्रों को दी जा रही है, उससे उनके अंदर देश–प्रेम और राष्ट्रीयता का संस्कार नहीं पनप रहा है हाँ, शिक्षा प्राप्त कर बस पैसा कमाने की मशीन बनता जा रहा है, कारण स्पष्ट है कि भारत को जो वास्तविक सभ्यता और संस्कृति है, आज के दौर की शिक्षा से उसका कोई सरोकार नहीं है।

प्राचीनकाल में शिक्षा का उद्देश्य था–जीवन की वास्तविकता से जनमानस को परिचित कराना, उस समय विद्यार्थी घर से दूर रहकर प्राकृतिक वातावरण में जीवन की सच्चाईयों के बीच रहकर शिक्षा प्राप्त करता था शिक्षा का स्वरूप नैतिक था, छात्रों को नियम और संयम का जीवन में पालन करना पड़ता था, महर्षि याज्ञवल्क्य भी उसी शिक्षा को उचित मानते थे, जो मनुष्य को सच्चरित्र और संसार के लिये कल्याणकारी बनाए।

वैश्वीकरण तथा भौतिकवाद की लगातार होती दौड़ में शिक्षा व्यवस्था में मूल्यों का पोषण तथा चरित्र निर्माण एक बड़ी सीमा तक पीछे छूटते जा रहे हैं, आज हमारे देश के नागरिकों, नौजवानों पर पश्चिमी सभ्यता का भूत सवार है, जिसके कारण वे अपनी संस्कृति व सभ्यता को भूलते जा रहे है, युवा पीढ़ी में ईमानदारी, अनुशासन सत्य–निष्ठा, दया, नम्रता, अहिंसा, धैर्य, सहानुभूति व सहनशीलता जैसे नैतिक मूल्यों का लगातार ह्रास हो रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य

1. लोगों को संस्कारवान शिक्षा से अवगत कराना।
2. बालकों को नैतिक मूल्यों के महत्व से अवगत कराना।
3. शिक्षक को उनकी महत्वपूर्ण भूमिका से अवगत कराना।
4. शिक्षा व नैतिक मूल्यों को आपस में सहसम्बन्धित कराना।
5. वर्तमान आवश्यकता के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन करने हेतु जनमानस को तैयार करना।

नैतिक शिक्षा ही वही माध्यम है, जो हमारे भीतर सही दृष्टिकोण, सही विचार तथा सही निर्णय लेने की क्षमता पैदा करती है जिससे हम अपने आपको जीवन की विषम परिस्थतियों के अनुरूप आसानी से ढाल लेते है, नैतिक शिक्षा व्यक्ति को तीन गुण प्रदान करती है–सोचने समझने की क्षमता, कार्य करने के बेहतर तरीके और व्यक्ति के आदर्श व्यवहार।

नैतिक शिक्षा विकास का आधारमूलक सत्य है, इसी शिक्षा रूपी साध्य से हम विकास की रूपी साधन को प्राप्त कर सकते है, नैतिक शिक्षा व्यक्ति के आन्तरिक गुणों (शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक) का विकास करती है, इन्हीं गुणों के द्वारा हम अपने बडों का आदर सम्मान व सेवा कर सकते है।

संस्कारतम शिक्षा के बगैर देश में सुशिक्षित समाज का विकास कभी सम्भव नहीं हो सकता, समाज के विकास के लिए आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ संस्कार–गत शिक्षा से ही रोजगार तक सबको पहुंच होगी, जोकि भेदभाव रहित सुशिक्षित समाज निर्माण की नींव तैयार करेगा।

आज हमारे देश में कुछ साम्प्रदायिक तत्वों की वजह से देश के विभिन्न भागों में आए दिन धर्मो, जातियों के आधार पर दंगे–फसाद होते रहते हैं, जो हमारे बीच प्रेम, सद्भावना और सहानूभूति जैसे गुणों के बीज बोए और हमें जाति, धर्म आदि संकीर्ण तत्वों से ऊपर प्रेम से रहना सिखाए जिससे हम अपने छोट–छोटे हितों को त्यागकर देश के हित का सर्वापरि समझे।

उस शिक्षा का कोई अर्थ नहीं, जो व्यक्ति को मानव मूल्यों, कर्तव्यों, सामाजिक सरोकारों तथा जीवन के आध्यात्मिक लक्ष्यों से परिचित न कराएं।

स्वामी विवेकानन्द ने भी कहा है ''कि शिक्षा मनुष्य की अन्तनिर्हित पूर्णता की अभिव्यक्ति है, हमें ऐसी शिक्षा की आवश्यकता है जिसके द्वारा चरित्र का गठन हो, मन का बल बढ़े बुद्धि की तर्कशक्ति का विकास हो और मनुष्य स्वावलम्बी बने, नैतिक शिक्षा से ही, शिक्षा के मानक–निर्माण का लक्ष्य पूरा होता है।

औद्योगिकीकरण के इस युग में अधिकतर माता–पिता कामकाजी है और इस वजह से वे अपने बच्चों के साथ कम समय बिताते है इस कारण बच्चों ने नैतिक मूल्यों का अभाव है और वे सही और गलत में फर्क नही करने में सक्षम नहीं है। यह मौजूदा परिदृश्य है और इसमें बदलाव आना जरूरी है क्योंकि देश का भविष्य इन्ही बच्चों पर निर्भर है।

निष्कर्ष

पाठ्यक्रम में परिवर्तन की जरूरत सभी जानते है लेकिन इस बारे में केवल विचार–विमर्श में ही वक्त बर्बाद हो रहा है, कम से कम अब तो और वक्त नहीं गंवाया जाना चाहिए और नैतिक शिक्षा को शैक्षिक संस्थानों में पाठ्यक्रम का अंग बना देना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

राघव, डा0 बी0 के0 (2015) ''नैतिक मूल्य'' विनोद प्रकाशन, आगरा।

अमर उजाला, मेरठ, 9 दिसम्बर 2015, पृ0 9

भटनागर, पी0 के0 (2010) 'शिक्षा के सामाजिक आधार' शिप्रा पब्लिकेशन नई दिल्ली।

पचौरी, आर. के. (2017), 'शिक्षा और नैतिक मूल्य,'' लाल बुक डिपो, मेरठ।

कटारिया, बी0 के0 (2010) 'वर्तमान शिक्षा की आवश्यकता, विनोद प्रकाशन आगरा।